International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 08 Issue: 04 | April - 2024 SJIF Rating: 8.448 ISSN: 2582-3930

महानायक बाबा साहब अंबेडकर और उनका शिक्षा जगत में योगदान

बबली पण्डाग्रे (रिसर्च स्कॉलर)
हिन्दी विभाग , बरकरउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
मध्यप्रदेश, भारत
पिन नं. 462026
मो. नं. 9981332654
email id – Babli1986pandagre@gmail.com

सार

भारत के पहले कानून और न्यायमंत्री डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक अच्छे अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। भारत रत्न से सम्मानित डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने राष्ट्रीय एकता की भावना को एक सूत्र में पिरोकर संविधान का निर्माण किया। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश को एक ऐसा प्रगतिशील और न्याय प्रर्वतक संविधान दिया , जिसने गरीब से गरीब व्यक्ति को भी न्याय का अधिकार सुनिश्चित कराया। अस्पृश्यता का विरोध करने वाले डॉ. बाबा साहब ने अछूतो के उद्वार के लिए कई आंदोलनो को जन्म दिया। उन्होने दलितो की शिक्षा व कल्याण के लिए बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। भगवत गीता की आलोचना करने वाले डॉ. साहब सभी को समान अधिकार दिलाना चाहते थे , परन्तु हिन्दू धर्म ग्रन्थ में जाति का विभाजन होने के कारण उन्होने हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्व धर्म अपना लिया। बीएपी पार्टी की स्थापना करने वाले बाबा साहब ने अछूत जातियो को भारतीय समाज की मुख्य धारा में जोडने का भरसक प्रयास किया। भारत को धर्म निरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का विशेष योगदान रहा। उन्होने इस बात की वकालत की कि अधिकारों का लाभ समाज के सभी वर्गो को मिले न कि केवल हिन्दू धर्म को।

शिक्षा जगत के महानायक बाबा साहब अम्बेडकर ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक उपलब्धि हासिल की। शिक्षा पर अपने विशेष व्याख्यान में उन्होने कहा कि – '' शिक्षा वंचितो के लिए मंदिर में प्रवेश से अधिक महत्वपूर्ण है।'' वर्णाश्रम का विरोध करने वाले डॉ. भीमराव जी अम्बेडकर का अधिकांश लोग महान राजनीतिक और अछूतोद्वारक मानते है। उन्होने कहा कि शिक्षा ही अन्धविश्वास व रुढिवाद का नाश कर सकती है। शिक्षा ही अज्ञान की दीवार का भेदन कर सकती है। उनके अनुसार शिक्षा इतनी समर्थ होना चाहिए कि जो दोषयुक्त व्यवहारो में परिवर्तन कर सके। उन्होने स्वयं कहा कि जो व्यक्ति न अपने कल्याण के लिए प्रयत्न करता है और नही दूसरो के कल्याण के लिए प्रयत्न करता है वह व्यक्ति निरर्थक जीवन के अस्तित्व में जीता हैं। वह अपने लिए ही नहीं बल्कि समस्त संसार के लिए व्यर्थ हैं।

बाबा साहब के अनुसार शिक्षा वास्तविक जीवन पर आधारित होनी चाहिए जिससे नैतिकता के सही मानदण्ड विद्यार्थी में विकसित हो सकें। अम्बेडकर जी के अनुसार शिक्षा का स्वरुप भ्रमक न होकर सरल होना चाहिए। यह छल,कपट,प्रपंच पर आधारित न होकर मानव के मध्य प्रेम प्रसारित करने वाली होनी चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा एक दुधारी तलवार की तरह हैं जो व्यक्ति चरित्रहीन व विनय रहित है वह शिक्षित होते हुए भी एक पशु से भयानक है।

कीवर्ड – लंदन मे शिक्षा, छात्रावास की स्थापना, नासिक सत्याग्रह, एनीहीलेशन ऑफ कास्ट, हिन्दू कोड बिल, इंडिया बिल

प्रस्तावना

महानायक के रुप में विख्यात डॉ. भीमराव जी अम्बेडकर ने भारत में ही नही बल्कि पूरे विश्व में अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। वे बहुमुखी प्रतिभा के छात्र थे। मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले में महू कस्बे में 14 अप्रैल 1891 में जन्मे डॉ. भीमराव अम्बेडकर अपने माता पिता की चौदहवी व आखरी संतान थे। उनके पिता रामजी सकपाल भारतीय सेना की महू छावनी में सेवारत थे तथा यहॉ काम करते हुए वे सूबेदार के पद तक पहुॅचे थे। ये विदेश जाकर अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. करने वाले पहले भारतीय थे। डॉ. बाबा साहब के नाम से विख्यात अम्बेडर ही एकमात्र भारतीय है जिनकी प्रतिमा लंदन संग्रहालय में कार्लमार्क्स के साथ लगी हुई है। भारतीय तिरंगे में अशोक चक्र को जगह देने का श्रेय भी डॉ. बाबा साहब को जाता है। अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार जीत चुके अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन डॉ. बी. आर अम्बेडकर को अर्थशास्त्र में अपना पिता मानते है। बौद्व धर्म मे दीक्षित बाबा साहब का महंत वीर चंद्रमणी ने इस

युग का आधुनिक बुद्ध कहा है। पढाई में रुचि रखने वाले बाबा साहब ने लंदन स्कूल में 8 वर्ष की पढाई केवल 2 वर्ष मे पूरी करके अपनी अलौकिक प्रतिभा का प्रमाण दिया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में बनाई गई सूची में पहला नाम डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर है। बाबा साहब की प्रतिभा का सम्मान करते हुए महात्मा गॉधी ने कहा कि बाबा साहब 500 स्नातक औा हजारों विद्वानों से भी अधिक बुद्दिमान है। बाबा साहब अम्बेडकर की विश्व के एक ऐसे महापुरुष है जिनके उपर कई गाने व किताबे लिखी गई। बाबा साहब ने भगवान बुद्ध, संत कबीर और महात्मा फूले इन तीनों को अपना गुरु माना है। बाबा साहब ने पीने के पानी के लिए सत्याग्रह किया। वे विश्व के प्रथम और एकमात्र सत्याग्रही है। बाबा साहब अम्बेडकर और महात्मा गॉधी के विचार कभी आपस में नही मिले। गॉधीजी ने अम्बेडकर जी से कहा कि ''मै अछूतो की समस्याओं के बारे में तब से सोच रहा हूँ जब आप पैदा भी नही हुए थे, मुझे ताज्जुब है कि इसके बावजूद आप मुझे उनका हितैषी नही मानते ? धनंजय की ने भी बाबा साहब के बारे में कहा कि अम्बेडकर ने गांधी से कहा अगन आप अछूतो के खैरख्वाह होते तो आपने कॉग्रेस का सदस्य होने के लिए खादी पहनने की शर्त के बजाए अस्पृश्यता निवारण को पहली शर्त बनाया होता ,किसी भी व्यक्ति को जिसने अपने घर में कम से कम एक अछूत व्यक्ति या महिला को नौकरी नहीं दी हो या उसने एक अछूत व्यक्ति के पालन पोषण का बीडा न उठाया हो या उसने कम से कम सप्ताह में एक बार किसी अछूत व्यक्ति के साथ खाना न खाया हो तो उसे कॉग्रेस का सदस्य बनने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी। बाबा साहब अपने समय में देश के सबसे पढे लिखे व्यक्तियों में से थे।

लंदन में शिक्षा

बाबा साहब अम्बेडकर उच्च शिक्षा हेतु लंदन गए और जून 1921 ई. में उन्होने एम.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। लंदन में ही उन्होने बैरिस्टर की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 1923 में लंदन विश्वविद्यालय नें डॉ. अम्बेडकर को डॉक्टर ऑफ साइन्स की उपाधि प्रदान की। उनका लेख '' रुपए की समस्या '' 1922 में प्रस्तुत किया गया।

छात्रावास की स्थापना

बाबा साहब अम्बेडकर ने गरीब बच्चो व दलितो के लिए जून 1928 में 2 छात्रावास खोले। उन्होने डिप्रेस्ड क्लासेस शिक्षा संस्था की स्थापना की ताकि पिछडे वर्गो के लोग समुचित शिक्षा प्राप्त कर सके। बाबा साहब ने पिछडे वर्गो के लिए बहुत अधिक संघर्ष किया उनके संघर्षो से प्रभावित होकर बंबई के गवर्नर ने 2 अक्टूबर 1928 को ऐसे ही 5 और हॉस्टल खोलने की घोषणा की।

नासिक सत्याग्रह

बाबा साहब अम्बेडकर निरन्तर गरीबो और दलितों के लिए प्रयासरत रहे। 2 मार्च 1930 को उन्होने अस्पृश्यों की सामाजिक स्वतंत्रता के लिए नासिक में मंदिर प्रवेश संघर्ष शुरु किया। उन्होने कहा कि वे मंदिर प्रवेश का आंदोलन इसलिए नही चला रहे कि उन्हे आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है बल्कि इसलिए चला रहे है ताकि वे अपने आधारभूत मानवीय अधिकार प्राप्त कर सके।

एनीहीलेशन ऑफ कास्ट

बाबा साहब अम्बेडकर को सन् 1936 में जात–पात तोडक मण्डल लाहौर(पंजाब) ने वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए एक आमंत्रण पत्र भेजा। बाबा साहब ने जाति–पाति तोडक मण्डल के वार्षिक सम्मेलन में संबोधित करने के लिए जो अभिभाषण लिखा था, उसे उन्होने एक पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया। यह पुस्तक जो उन्होने जातियों का निर्मूलन के नाम से प्रकाशित की। यह जाति की समस्या पर एक प्रमाणिक और अनुपम पुस्तक मानी जाती है।

हिन्दू कोड बिल

बाबा साहब अम्बेडकर ने स्त्रियों के अधिकारों के लिए भी प्रयास किए। अम्बेडकर जी ने विधि मंत्री के रुप में परिश्रम करके हिन्दू कोड बिल तैयार किया। इस बिल में उन्होनें महिलाओ को भी संपत्ति और तलाक के अधिकार प्रदान किए जाने का प्रस्ताव पास किया। 5 फरवरी 1951 में अम्बेडकर ने केन्द्रिय विधान परिषद में हिन्दू बिल प्रस्तुत किया। यह अधिवेशन 3 दिन तक लगातार जारी रहा। इसके बाद बिल पर बहस हुई । अगला अधिवेशन जो सितम्बर 1951 में होना था स्थगित रहा। सरकार अनुसूचित जातियों की ओर अपना कर्तव्य नही निभा रही थी और हिन्दू कोड बिल भी पास न होने के कारण 28 सितम्बर 1951 को बाबा साहब ने कानून मंत्री के पद से त्याग पत्र दे दिया।

इंडिया बिल

ब्रिटिश संसद में 19 दिसंबर 1934 को इंडिया बिल पेश किया गया। जिस पर डॉ. अम्बेडकर ने दूसरे सदनो की स्थापना एवं गठन का विरोध किया। उन्होने कहा कि दूसरे सदनो की स्थापना के साथ पूना पैक्ट का उददेश्य समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त दूसरे सदनों में अछूत अपने मुकाबलें में धनवान तथा प्रभावशाली हिन्दू उम्मीवारों को पराजित नही कर सकेगे। दूसरे सदनों की स्थापना का बाबा साहब ने साईमन कमीशन के समक्ष और गोलमेज कान्फ्रेस में भी प्रबल विरोध किया था।

साम्रगी और विधियॉ

किसी शोध को पूरा करने के लिए किसी न किसी शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। शोध की यद्यपि बहुत सी प्रविधि होती है परन्तु प्रत्येक शोध अलग–अलग प्रकार का होता है। अतः शोध कार्य के लिए शोध प्रविधि भी अलग–अलग होती है। शोध को पूरा करने के लिए मात्रात्मक अनुसंधान विधि, गुणात्मक अनुसंधान विधि, विवरणात्मक अनुसंधान विधि, विश्लेषणात्मक अनुसंधान विधि, अनुप्रयुक्त अनुसंधान विधि, आधारभूत अनुसंधान विधि, अवधारणात्मक अनुसंधान विधि, नैदानिक अनुसंधान विधि,ऐतिहासिक अनुसंधान विधि आदि का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा शोध की **विश्लेषणात्मक विधि** का प्रयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता को सर्वप्रथम संबंधित विषय अथवा घटना के बारे में जानकारी संकलित करनी होती है। इसके बाद जानकारी के आधार पर ही संकलित की गई सामग्री का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। पूर्व में एकत्रित किए गए तथ्यों, आंकडों, विचारों आदि से परे अंतदृष्टि रखते हुए एक समाज–विश्लेषक का मानना होता है कि संचित तथ्यों व आंकडो के पीछे की कहानी कुछ और ही होती है। अतः उस छिपे हुए संदर्भो को तलाशने में एक विश्लेषक की अधिक रुचि होती है। इसके पीछे तर्क यह है कि संग्रहित तथ्यों व आंकडों को जब सामग्री से संबंधित अन्य चरों के साथ जोडा जाता है तो एक व्यापक और परिष्कृत अर्थ उभरकर सामने आता है तथा इस प्रस्तुत अर्थ की सहायता से एक वैध सामान्यीकरण प्रस्तुत करना सरल हो जाता है। प्रस्तुत शोध –प्रबंध के लिखने मे अनेक शोध प्रविधियॉ प्रयुक्त हुई है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए उपन्यासो,शोध ग्रन्थो,पुस्तको और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन अनुशीलन द्वारा तथ्य संकलन,विवेचन एवं निष्कर्ष निरुपण की प्रविष्टियां प्रयुक्त है। साम्रगी के संकलन मे विभिन्न संग्रहालयों और ग्रन्थालयों की यात्राएं भी हुई है। शोध की साम्रगी एकत्रित करने हेतु विभिन्न जानकार महापुरुषो से भी संपर्क हुआ है। शोध क्रिया पर आधारित सामाजिक विश्लेषण की प्रक्रिया एक निरंतर क्रियाशील रहने वाली प्रकिया होती है। यह क्रमबद्व विश्लेषण एक ऐसा बौद्विक फलक तैयार करता है, जहॉ छॉटे हुए तथ्यों और आंकडो को व्यवस्थित रुप से रखा जाता है, ताकि शोधकर्ता उनकी मदद से एक वैध अनुमान तक पहुॅच सके। तथ्य स्वयं अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने हेतु योग्य बनाया जाता है। सामाजिक विश्लेषण हेतु संकलित की गई सामग्री की व्यापक और सटिक जानकारी की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

सारांश रुप मे कहा जा सकता है कि बाबा साहब अम्बेडकर ने दलितों के लिए जो कदम उठाए, वे कदम किसी और ने ना उठाए हो। अम्बेडकर जी ने कहा कि सफाई कर्मचारियों के उत्थान का गॉधीवादी रास्ता कृपादृष्टि और नीचा दिखाने वाला है। एक ओर गॉधीजी अस्पृश्यता के दाग को हटाकर हिन्दुत्व को शुद्व करना चाहते थे। दूसरी ओर आम्बेडकर ने हिन्दुत्व की ही समाप्त कर दिया। गॉधीजी और बाबा साहब हमेशा एक–दूसरे के राजनीतिक विरोधी बने रहे, लेकिन दोनो ने अपमानजनक सामाजिक व्यवस्था को कमजोर करने में पूरक भूमिका निभाई। गॉधीजी ने दलितो के लिए जो हरिजन संबोधन दिया था उसका अम्बेकर जी ने विरोध किया और दलित उस ' गाली ' के समान मानते थे। गॉधीजी द्वारा शुरु किया गया 'हरिजन सेवक संघ' भी दलितो को नापसंद था क्योकि '' वो एक उॅची जाति की मदद से दलितों के उत्थान की सोच दर्शाता था ना कि दलितों के जीवन पर उनके अपने नियंत्रण की ''। अम्बेडकर जी ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और दलितो का उत्थान किया। वे बाबा साहब समाज के बजाय संविधान को ज्यादा से ज्यादा ताकतवर बनाने की पैरवी करते थे। बाबा साहब ने अपनी किताब थॉट्स ऑफ पाकिस्तान मे कहा कि उन्हे मामूली व्यक्ति से बाबा साहब आम्बेडकर बनाने का श्रेय रमाबाई को ही जाता हैं। विश्व मे हर जगह भगवान बुद्व की बंद ऑखो वाली प्रतिमाऍ दिखाई देती है लेकिन बाबा साहेब अम्बेडकर ने भगवान बुद्व की खुली ऑखो वाली प्रतिमा बनाई ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 नैमिषराय , मोहनदास – ''बाबा साहेब ने कहा था'' – पृष्ठ 76

2 नैमिषराय , मोहनदास व ए. आर. अकेला , – ''बाबा साहेब ने कहा था'' – पृष्ठ 17

3 टेन स्पोक अम्बेडकर, भाग 2 पृष्ठ – 137

4 एल. आर. बाली , डॉ. अम्बेडकर जीवन और मिशन पृष्ठ संख्या – 168

5 धनंजय कीर , डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर जीवन–चरित , पृष्ठ संख्या – 178

6 प्रो. एम.एल. गुप्ता डॉ डी.डी. शर्मा , समाजशास्त्र(भीमराव अम्बेडकर) पृष्ठ संख्या – 99

7 Education aacharya.com

8 Tv9hindi.com

9 Jagranjosh.com

10 http;//shodhganga.inflibnet.ac.in/

11 http;//www.hindi2dictionary.com/

12 http://m-hindi.webdunia.com